शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध – काव्य

कवि – मैथिलीशरण गुप्त

Date: ________ Page: ______

प्रश्न :- जयद्रथ-वध काव्य से क्या सन्देश मिलता है? वर्णन करें।

उत्तर :- मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रवादी एवं मानवतावादी कवि हैं। उनका मानवतावादी दर्शन भारतीय साहित्य, समाज, धर्म और सांस्कृतिक संस्कारों से स्वयं ही उद्भूत हुआ है और इस पर वैष्णवी भावना का प्रभाव भी हुआ है। गुप्त जी का लेखन काल बीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक है जिसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनों का सूत्रपात हो चुका था। इस राष्ट्रीय आन्दोलन में सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक आन्दोलनों और उससे हुए परिवर्तनों का भी स्पष्ट संकेत उस युग में प्राप्त होता है। गुप्त जी ने अपनी इन भावनाओं का प्रसार अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से किया है। आगे चलकर ये ही सभी भावनाएँ एक साथ उनके काव्यों में व्यापक रूप में दिखाई पड़ता है।

जयद्रथ-वध में मानवता का प्रश्न कवि ने उठाया है। दुर्योधन की भाँति अंग्रेजों ने तत्कालीन भारत को अपने शासन में रखा था इसलिए समस्त भारतवासी न्याय एवं अधिकार से वंचित थे। कवि कहता है–

अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।

अधिकार के लिए लड़ने वाले न जाने कितने नवयुवकों आततायियों ने जबर्दस्ती मार डाला था।

मानव जीवन दुःख सुख की भावनाओं का भण्डार है। सभी पर दुःख पड़ते हैं किन्तु उस अवस्था में अचेत होकर बैठे रहना बुरी बात है। क्योंकि मानव यदि अपना कर्म करे तो अपने दुःखों को सुखों में परिणत कर सकता है।

पर चाहिए सबको सदा कर्तव्य अपना पालना।
हे विज्ञ! सो सब सोचकर यों शोक में न रहो पड़े।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अभिमन्यु के माध्यम से भारतीय नवयुवकों के उत्साह के साथ अधर्म के विरुद्ध लड़ने की प्रवृत्ति का चित्रण किया है। अर्जुन के माध्यम से यहाँ के सुप्त शौर्य का वर्णन है। धर्मराज युधिष्ठिर के माध्यम से यहाँ के धार्मिक वृत्ति के लोगों का वर्णन

शेष आगे–

Date ______ Page ______

किया है।

गुप्त जी वैष्णव हैं। भक्ति भावना उनके सहज जीवन का आवश्यक अंग है। गुप्त जी राम भक्त हैं किन्तु राम और कृष्ण विष्णु के ही दो रूप हैं। अतः यहाँ पर उन्होंने कृष्ण के प्रति बड़ी भक्ति की भावनाएँ व्यक्त की है।

इस प्रकार मानवता, पुरुषार्थ में आस्था, राष्ट्रीयता की भावना तथा परमात्मा में आस्था आदि उद्देश्यों को लेकर गुप्त जी ने एक सफल खण्ड काव्य की रचना की है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 3/9/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
'निबंधमाला' गद्य खण्ड
शीर्षक - अनेकता में एकता : भारतीय ~~साहित्य में~~
लेखक - महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- भारतीय भावना का मूल स्वर क्या है?

उत्तर:- महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री ने अपने प्रसिद्ध निबंध अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में" भारतीय भावना का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने कहा है कि "एकोऽहं बहुस्याम" एक से अनेक हो जाऊँ अथवा 'अविभक्तं विभक्तेषु' विभक्तों में भी अविभक्त रहूँ यही भारतीय भावना का मूल स्वर है, जो हमारी अनेकता में एकता को प्रतिबिंबित करता है।

हमारी यह एकता कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हमारी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में ही इस चेतना को देखा जा सकता है। महाकवि शास्त्री जी उपनिषद् का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि आग तो एक ही है किन्तु वह धरती पर विभिन्न रूपों में प्रकट होती है।

प्रश्न:- निबंधकार शास्त्री जी को किस बात का दुःख है?

उत्तर:- उच्च कोटि के समीक्षक महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री जी को इस बात का दुःख है कि कुछ स्वार्थी तत्व अपने घृणित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजनीति को हथकण्डा बनाकर हमारी एकता के मधुवन को उजाड़ना चाहते हैं। वे हमारी सदियों से चली आ रही परम्परा को, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अपने लोभ में तोड़ देना चाहते हैं। ऐसे ही लोगों के कार्यों से शास्त्री जी को दुःख हुआ है।

प्रश्न:- शास्त्री जी देशवासियों को किस प्रकार आह्वान करते हैं?

उत्तर:- महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री बड़ी भावुकता के साथ समस्त देशवासियों से आह्वान करते हुए कहते हैं कि - "हे देशवासी आओ अग्रपंथी, उग्रपंथी, प्राचीन, नवीन सब आओ! आओ धनी, मनी, सर्वहारा, मजदूर, श्रमिक, बेकार सब इकट्ठे आओ। बीहड़ को गढ़ना है, धीरज वाले, शिल्पी

Date ______ Page ______

आओ। राजनीतिक दलबन्दी तो थोथी होती है। क्योंकि टूटी है वह। वस्तुतः एकता स्वाधीनता और शान्ति एक ही अर्थ के भिन्न-भिन्न शब्द हैं।"

डॉ० देव चरण प्रसाद 30।07।20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, द्वितीय-पत्र
दिगंत - भाग - 2 - पद्य भाग Date: ________ Page: ______

शीर्षक - कवित्त
कवि - भूषण

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं? इनका हिन्दी के पाठकों में बहुत सम्मान का कारण क्या है?

उत्तर:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। ये हिन्दी साहित्य में जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं। वीर रस के इस महान कवि ने फड़कती हुई मुक्तक शैली में छत्रपति शिवाजी और बुंदेल वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई हैं, इसी कारण हिन्दी पाठकों में सम्मान है।

प्रश्न: कवि भूषण की प्रमुख कृतियों का उल्लेख करें?

उत्तर:- महाकवि भूषण द्वारा रचित शिवराज भूषण (385 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान), छत्रसाल दशक (10 छंदों में छत्रसाल की वीरता का यशोगान) प्रमुख है। भूषण हजारा, भूषण उल्लास इत्यादि प्रसिद्ध रचना भी है।

प्रश्न:- भूषण की पारिवारिक पृष्ठभूमि का परिचय दें।

उत्तर:- कवि भूषण का जन्म 1613 ई० में उत्तरप्रदेश के कानपुर के निकट एक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। रीति काल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम सम्भवतः भूषण के भाई थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद 30-09-20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ